प्राक्कथन

महाभारत में देख सकता है कि कुरूक्षेत्र युद्ध में पितामह भीष्म जी नपुंसक शिखण्डी के सामने पराजित हो जाता है।भीष्मजी की पराजय का मुख्य कारण उसका कुसूर-बोध है।एक निरपराध और निष्कलंक स्त्री का जीवन बर्बाद करने से पैदा हुआ कुसूर-बोध से वह निरंतर पीड़ित है। काशी राजा की बेटी अंबा, सालवा के महाराजा से प्रेम करती है।भीष्मजी, अपना आधा-भाई विचित्र वीर्य केलिए, अंबा को, बहिनें अंबिका और अंबालिका के साथ चुरा करते हैं। अंबा के प्रेम के बारे में जानकर भीष्मजी उसे स्वतंत्र करता है। पर प्रेमी उसे न स्वीकारता है। लौट आयी अंबा को भीष्म भी पुन: स्वीकारने केलिए तैयार नहीं होता।दो पुरूषों के बीच फँसकर वह अपमानित हो जाती है। बदला करने केलिए वह शिखण्डी के रूप में पुन: जन्म लेती है।

शायद, नारी अस्मिता और विद्रोह का समारंभ यहीं से शुरू होती है।पौराणिक ग्रन्थों एवं वेदों में भी नारी के विद्रोह एवं अस्मिता बोध के कई उदाहरण देखने को मिलते हैं। हिन्दी कहानी साहित्य में नारी-अस्मिता के अनेक ज्वलंत उदाहरण देखने को मिलते हैं।

मेरा शोध विषय ***सत्तरोत्तर हिन्दी कहानी में नारी अस्मिता की अभिव्यक्ति*** है।पहले अध्याय में नारी जागरण के बदलते परिवेश के बारे में चर्चा होती है।भारतवर्ष में विभिन्न युगों में नारी के स्थान और नारी को प्राप्त महिमा के बारे में प्रस्तुत अध्याय में बताया जाता है।

दूसरे अध्याय में नारी अस्मिता की अभिव्यक्ति करनेवाले प्रमुख कहानीकारों का परिचय किया है।प्रत्येक कहानीकार के प्रमुख कहानी संग्रह, पुरस्कार तथा नारी पात्रों की सविशेषतायें भी वर्णित है। अमरकांत, इब्राहीम शरीफ, उषा प्रियंवदा, कमलेश्वर, कामिनी बाली, कान्ता सिन्हा, कुसुम अंसल, कृष्णा अग्निहोत्री, कैलाश बनवासी, गिरिराज किशोर, चित्रा

मुद्रगल, दीप्ती खण्डेलवाल ,नासिरा शर्मा, प्रीतम अरोडा, मणिका मोहिनी, मन्नु भण्डारी,ममता कालिया, महीप सिंह, मार्कण्डेय, मालती जोशी, मेहरून्निसा परवेज, मृदुला गर्ग, मृणाल पाण्डेय,मंजुल भगत,रवीन्द्र कालिया, राजी सेठ,रमेश बक्षी, विजय चौहान, शशिप्रभा शास्त्री, शैलेश मटियानी, सविता चडढा, सिम्मी हर्षिता, सूर्यबाला आदि कहानिकारों का उल्लेख प्रस्तुत अध्याय में हुआ है।

तीसरे अध्याय में नारी जीवन की विभिन्न समस्याओं के बारे में चित्रित किया है।आज भी नारी देह को कई प्रकार की शारीरिक एवं मानसिक पीड़ायें सहना पड़ता है। पारिवारिक तथा कर्म-क्षेत्र में वह बहूत बोझ वहन करती है।

चौथे अध्याय में नारी अस्मिता को अभिव्यक्त करनेवाली सौ कहानियों का विश्लेषण एवं विवेचन हुआ है। 'सुमिन्तरा की बेटियॉं', 'संज्ञाहीनता से ज्ञानशून्यता तक', 'उत्तरार्द्ध', 'प्रलाप', 'विद्रोह', 'कील', 'चक्रभोग', 'मरियम', 'पूर्वाभास', 'कथाहीन', 'धूप की उंगलियों के निशान', 'पुरजा', 'नई मॉं', 'प्रश्नचिहन', 'प्रेम', 'सत्य की खोज में', 'भूख', 'एकान्तवास', 'यादें', 'शेष अशेष', 'बिब्बो', 'एक और एक', 'जॉच अभी जारी है', 'शाम के वक्त, 'अन्तिम कारावास', 'तीन मित्र और चमेलीबाई', 'तितली के पंख', 'दूध और दवा', 'मेरे आशिक का नाम', 'मॉं तुझे सलाम', 'दूसरा कबूतर', 'खुदा की वापसी', 'बिंदिया', 'अधूरा स्वप्न', 'पोशिया', 'ग्रोथ', 'अवसान एक स्वप्न का', 'स्मृतिकल्प', 'कठफोड़वा', 'कगार पर', 'ऐसा ही है', 'चक्करघिन्नी, 'तपिश के बाद', 'एक अदत औरत', 'झोंका', 'अतृप्त आत्माओं का देश', 'प्रतिरोध', 'मेरे कत्ल में तुम्हारा हाथ था', 'बू', 'नशा', 'नागपाश', 'अंधे मोड़ से आगे', 'सिसकते सपनों की शाम', 'खोज', 'एक और विवाह', 'उसी जंगल में', 'ढलान पर', 'तीसरा पेंच', 'अभी तो', 'हरी बिन्दी', 'उसका मन', 'छुटकारा', 'नालायक बहू', 'त्रिशंकु', 'चाल', 'मछलियॉं', 'अपने अपने दायरे', 'मीरा नाची', 'मेरा', 'क्षितिज', 'ढाई आखर प्रेम का', 'हम बुरे नहीं थे', 'एक पारो पुरवैया', 'पच्चीस साल की लडंकी', 'शहर के नाम', 'अनाड़ी',

'रेशम', 'बीच का मौसम'और 'बाहरी जन' आदि कहानियों का विवेचन प्रस्तुत अध्याय में हुआ है।

पॉचवॅ अध्याय इस शोध-प्रबन्ध का समापन अध्याय है।इस अध्याय में शोध का निष्कर्ष प्रस्तुत होता है।इसमें शोधार्थिनी के विचारों का प्रस्तुतीकरण भी होता है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की रचना महात्मा गांधी विश्वविद्यालय से संबद्ध पाला सेंट थॉमस महाविद्यालय के हिन्दी स्नातकोत्तर एवं शोध विभाग के प्रपाठक डा. वी. वी. जॉर्जकुट्टी के मार्गदर्शन में संपन्न हुई है।जिस तत्परता और स्नेह के साथ उन्होंने मुझे सदा प्रेरणा दी है उसकेलिए मैं जिन्दगी भर कृतज्ञ रहूँगी।हिन्दी विभाग के अन्य गुरूजनों, सेंट. थॉमस महाविद्यालय के तथा महात्मा गांधी विश्वविद्यालय के ग्रान्थालय के कर्मचारियों और सेंट. थॉमस महाविद्यालय के श्रद्धेय प्राचार्य डा. माथ्यू जॉण कोक्काट जी के प्रति भी मैं आभारी हूँ।

हिन्दी विभाग , **सान्टी जॉसफ**

सेंट. थॉमस महाविद्यालय ,

पाला . कोट्टयम .

15-01-2009